Regarding setting up of Ahir Regiment-laid

श्री धर्मबीर सिंह (भिवानी-महेन्द्रगढ़) : हमारे देश के विभिन्न समुदायों ने भारतीय सेना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और अहीर समुदाय भी इस परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। 1920 में ब्रिटिश शासन ने अहीरों को "कृषक जाति" के रूप में वर्गीकृत किया, जो उस समय "लड़ाकू जाति" का पर्याय था। अहीर समुदाय ने भारतीय सेना में अपने साहस, बलिदान और देशभक्ति के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। 1945 में 19 कुमाऊं रेजिमेंट बनी, जिसने रेजंगला युद्ध में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। 13 कुमाऊं की अहीर रेजिमेंट ने 1962 में लद्दाख में चीनी हमले का डटकर सामना किया। इस युद्ध में 120 अहीर जवानों ने अपनी अंतिम सांस तक लड़ाई की और 117 में से 114 जवान शहीद हो गए। मेजर शैतान सिंह की अगुवाई में इन जवानों ने अप्रतिम वीरता दिखाई, जिसके लिए मेजर शैतान सिंह को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। अहीर रेजीमेंट की स्थापना की मांग केवल सामाजिक न्याय का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह हमारी सेना की शक्ति और विविधता को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण कदम है। विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधित्व से सेना में समावेशिता और एकता को बढ़ावा मिलता है, जिससे राष्ट्र की सुरक्षा सुदृढ़ होती है। मैं अपील करता हूं कि अहीर रेजीमेंट की स्थापना की जाए।